।। ॐ श्री साईनाथाय नमः।।
।। ॐ श्री सद्गुरुनाथ दादाय नमः।।

तत्व बोध

श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था
नई दिल्ली
अंक – 03

श्री साई शक 43
5 जनवरी 2025

गुरुबंधु–भगिनियों से,

आज प्रतिदिन सुखों के नए–नए साधन और सुविधाऐं बाजार में बिकने के लिए लाई जाती है। बाजार में कोई नई वस्तु आते ही हमारी इच्छा होती है कि वह हम तुरंत खरीद लें लेकिन जो वस्तु हमारे पास वर्तमान में है उससे क्या हमें शांति और समाधान का अनुभव हो रहा है इसका विचार करना आवश्यक है। उदाहरण देखिए – आज किसी के पास दो गाड़ियाँ है लेकिन नए मॉडल के आते ही उसे लगता है कि पुरानी गाड़ी बेचकर नई खरीद लें। मार्केट में नए डिजाईन के कपड़े देखते ही इच्छा होती है कि उन्हें तुरंत खरीद लें और हम वे खरीदते भी है। बाजार में मोबाइल फोन का नया मॉडल आते ही वर्तमान फोन से मन उब जाता है और हम इस कोशिश में लग जाते है कि नया फोन किस तरीके से खरीदा जाऐं। यहाँ विचार करना आवश्यक है कि ऐसी खरीद से क्या हम शांति और समाधान का अनुभव कर पा रहे है? मान लीजिए कि किसी व्यक्ति की आवश्यकता और हैसियत के अनुसार उसके पास 20 जोड़ी शर्ट–पैंट होने चाहिए और उसके पास वे है भी। अब क्या वह व्यक्ति एक जोड़ी फटने या पुराने होने पर नया कपड़ा लेता है या बाजार में गया है, नया कपड़ा अच्छा लग रहा है इसलिए ऐसे ही खरीद लेता है? देखिए, हमारे पास सुख–सुविधा का सामान है, उससे अगर हमें शांति और समाधान मिल रहा है तो नई वस्तु के प्रति हमें आसक्ति नहीं होगी। बाजार में रोज ही नई–नई सुख–सुविधा की वस्तुऐं आती रहेंगी परन्तु

हमारी खरीदी हुई वस्तुओं से हमें शांति और समाधान का अनुभव होना आवश्यक है।

प्राप्त जीवन में हमें सुख, शांति, समाधान कितना होना चाहिए इसके बारे में वं. दादा जी ने एक मुलाकात में बताया है कि इनका उचित अनुपात है 25% सुख, 25% शांति और 50% समाधान होना। इसका अर्थ है किसी वस्तु से हमें जितनी मात्रा में सुख मिला है उतनी मात्रा में शांति तथा उसकी दुगनी मात्रा में समाधान मिलना चाहिए। इसमें समाधान का महत्व सबसे ज्यादा है क्योंकि आज के जीवन में प्राप्त हुए समाधान का रूपांतर अगले जन्म में सत्कर्म के रूप में होता है। इस जन्म मे ंहम अड़चनों से परेशान हुए। सत्कर्मों की कमी के कारण हमें समस्याओं से तकलीफ हुई और होती है। अगर हमें लगता है कि अगले जन्म में इस तरह की परेशानियाँ नहीं आए तो आज हमें अधिक से अधिक समाधान का अनुभव होना आवश्यक है। अब समाधान का अनुभव हमें कैसे होगा? वं. दादा जी ने बताए अनुसार हम दैनंदिन ॐ कार साधना, आरती साधना करते है तो हमारी आत्मिक शक्ति बढ़ती जाएगी। देहिक और आत्मिक शक्ति में संतुलन होने से हमें समाधान का अनुभव होने लगेगा। यही अगले जन्म के लिए सत्कर्म की प्राप्ति है मतलब हमारे अगले जन्म का प्रबंध है।

।। शुभम् भवतु।।